अनतरद्वनद ... दलि को छू लेने वाली कहानी

कहानयिाँ तो बहुत पढ़ी है और सुनी भी बहुत है। कुछ सच्ची होती है तो कुछ काल्पनकि होती है। कुछ बन जाती है तो कुछ बुनी हुयी होती है। कहानयिां राजा और रानी की हो तो बहुत पसंद की जाती है। बचपन में सुना करते थे कि एक राजा था एक रानी थी दोनों मलि और ख़त्म कहानी।
एक कहानी जो बनी नहीं बल्कि बुनी हुयी है शब्दों के ताने बाने से लेकनि इस कहानी में राजा भी है और रानी भी। इस कहानी में राजा - रानी मलि तो गए लेकनि अंत में मलिेंगे नहीं । क्यूंकि हमारा जो राजा है वो कसिी और रानी का है तो हमारी रानी भी कसिी और राजा की ही रानी है ...!
तो फरि क्या हुआ ख़त्म कहानी ...!
नहीं ऐसा तो नहीं लगता कि कहानी खत्म हो गयी ...जब शुरू की है तो खत्म कैसे की जाये ...मगर कहानी बुनी है तो कुछ तो बुनना ही पड़ेगा .....
तो शुरुआत रात के समय से होती है। कहानी की नायकि यानी हमारी रानी यानी वेदकि ...! की आज चूड़यिाँ और पायल कुछ ज़्यादा ही खनक -छमक रहे है। कलाई भर चूड़यिाँ और बजती पायल परविार की रीत है और फरि उसके पयिा जी को भी खनकती चूड़यिाँ ही पसंद है और पायल भी।
मगर आज ये पायल - चूड़यिाँ पयिा के लएि तो नहीं खनक रही , बस आज बहुत खुश है वेदकि ...! दौड़ कर सीढयिाँ चढ़ रही है। छत पर पूनम का चाँद खलि रहा है।उसे छत पर से चाँद देखना नहीं पसंद।उसे तो अपनी खड़िकी से ही चाँद देखना पसंद है , उसे लगता है कि खड़िकी वाला चाँद ही उसका है , छत वाला चाँद तो सारी दुनयिा का है।
कमरे में जाते ही देखा राघव तो सो गए हैं। थोडा मायूस हुई वेदकि , उसे इस बात से सख़्त चढि थी के जब वह कमरे में आये और राघव सोया हुआ मलि। उसे रात का ही तो समय मलिता था राघव से बतयिाने का , दनि भर तो दोनों ही अपने-अपने काम , जम्मिेदारयिों में व्यस्त रहते हैं। लेकनि वह तो सो गया था।अक्सर ही ऐसा होता है।
थोड़ी दूर रखी कुर्सी पर वह बैठ खड़िकी में से झांकता चाँद नहिारती रही। फरि सोये राघव को नहिारती सोच रही थी कि कितिना भोला सा मासूम सा लग रहा है ,एकदम प्यारे से बच्चे जैसा नश्छिल सा , और है भी वैसा ही नश्छिल ...वेदकि का मन कयिा झुक कर राघव का माथा चूम ले , हाथ भी बढाया लेकनि रुक गयी।
संयुक्त परविार में वेदकि सबसे बड़ी बहू है।राघव के दो छोटे भाई और भी है। सभी अपने परविारों सहति साथ ही रहते है। राघव के माँ-बाबा भी अभी ज़्यादा बुजुर्ग नहीं है।
बहुत बड़ा घर है ,जसिमे से तीसरी मंजलि पर कमरा वेदकि का है। साथ ही में एक छोटी सी रसोई है। रात को या सुबह जल्दी चाय-कॉफ़ी बनानी हो तो नीचे नहीं जाना पड़ता। बड़ी बहू है तो काम तो नहीं है पर जम्मिेदारी तो है ही। पछिले बाईस बरसों से उसकी आदत है कि सभी बच्चों को एक नज़र देख कर संभाल कर , हर एक के कमरे में झांकती कसिी को बतयिाती तो कसिी बच्चे की कोई समस्या हल करती हुई ही अपने कमरे में जाती है। वह केवल अपने बच्चों का ही ख़्याल नहीं रखती बल्कि सभी बच्चों का ख़्याल रखती है। ऐसा आज भी हुआ और आदत के मुताबकि राघव सोया हुआ मलि।
राघव की आदत है बहुत जल्द नीद के आगोश में गुम हो जाना।वेदकि ऐसा नहीं कर पाती वह रात को बस्तिर पर लेट कर सारे दनि का लेखा -जोखा करके ही सो पाती है।
लेकनि आज वेदकि का मन कही और ही उड़ान भर रहा था।वह धीरे से उठकर खड़िकी के पास आ गयी। बाहर अभी शहर भी नहीं सोया था। लाइटें कुछ ज़्यादा ही चमक रही थी। कुछ तो शादयिाँ ही बहुत थी इन दनिों , थोडा कोलाहल भी था तेज़ संगीत का , शायद नाच-गाना चल रहा है ।
उसकी नज़र चाँद पर टकि गयी और ख़ुशी थोड़ी और बढ़ गयी जो कि राघव को सोये हुए देख कर कम हो गयी थी।उसे चाँद में प्रभाकर का चेहरा नज़र आने लगा था सहसा। खड़िकी वाला चाँद तो उसे सदा ही अपना लगा था लेकनि इतना अपनापन भी देगा उसने सोचा ना था।
तभी अचानक एक तेज़ संगीत की लहरी कानो में टकराई। एक बार वह खड़िकी बंद करने को हुई मगर गीत की पंक्तयिाँ सुन कर मुस्कुराये बगैर नहीं रह सकी। आज-कल उसे ऐसा क्यूँ लगने लगा है कि हर गीत ,हर बात बस उसी पर लागू हो रही है। वह गीत सुन रही थी और उसका भी गाने को मन हो गया ..., जमाना कहे लत ये गलत लग गयी , मुझे तो तेरी लत लग गयी ...!
अब वेदकि को ग्लानि तो होनी चाहएि , कहाँ भजन सुनने वाली उम्र में ये भोंडे गीत सुन कर मुस्कुरा रही है।लेकनि उसका मन तो आज-कल एक ही नाम गुनगुनाता है , प्रभाकर
यही प्रभाकर हमारी कहानी का राजा है ...!

वेदकिा इतनी व्यस्त रहती है और घर से कम ही नकिलती है , कहीं जाना हो तो पूरा परविार साथ ही होता है लगभग तो प्रभाकर से कैसे मलिी...!अब यह प्रभाकर कौन है ...?
तो क्या वह उसका कोई पुराना ...?

अजी नहीं ...! आज कल एक चोर दरवाज़ा घर में ही घुस आया है। कम्प्यूटर -इंटरनेट के माध्यम से ...! नयी -नयी टेक्नोलोजी सीखने का बहुत शौक है वेदकिा को इंटरनेट पर बहुत कुछ जानकारी लेती रहती है। बच्चों के पास बैठना बहुत भाता है उसे तो उनसे ही कम्प्यूटर चलाना सीख लयिा । ऐसे ही एक दनि फेसबुक पर भी आ गयी।

फेसबुक की दुनयिा भी क्या दुनयिा है ...अलग ही रंग -रूप .....एक बार घुस जाओ तो बस परीलोक का ही आभास देता है। ऐसा ही कुछ वेदकिा को भी महसूस हुआ।

ना जाने कब वह प्रभाकर को मत्रि से मीत समझने लगी। और आज खुश भी इसीलएि है कि ...,
खट -खट आईने के आगे रखा मोबाईल खटखटा उठा था। वेदकिा ने उठाया तो प्रभाकर का सन्देश था। शुभरात्रि कहने के साथ ही बहुत सुंदर मनभाता कोई शेर लखिा था। देख कर उसकी आखों की चमक बढ़ गयी। तो यही था आज वेदकिा की खुशी का राज़ ...पछिले एक साल से प्रभाकर से चेटगि से बात हो रही थी आज उसने फोन पर भी बात कर ली। और अब यह सन्देश भी आ गया।

नाईट -सूट पहन अपने बस्तिर पर आ बैठी वेदकिा , राघव को नहिारने लगी और सोचने लगी कि यह जो कुछ भी उसके अंतर्मन में चल रहा है क्या वह ठीक है। यह प्रेम-प्यार का चक्कर ...! क्या है यह सब ...? वह भी इस उम्र में जब बच्चों के भवष्यि के बारे में सोचने की उम्र है। तो क्या यह सब गलत नहीं है ? और राघव से क्या गलती हुई ...! वह तो हर बात का ख्याल रखता है उसका। कभी कोई चीज़ की कमी नहीं होने दी। अब उसे काम ही इतना है की वह घर और उसकी तरफ ध्यान कम दे पाता है तो इसका मतलब यह थोड़ी है की वेदकिा कहीं और मन लगा ले। अब वेदकिा का मन थोडा बैचैन होने लगा था।

वेदकिा थोड़ी बैचेन और हैरान हो कर सोच रही थी। इतने उसूलों वाले वचिार उसके ,इतनी व्यस्त जन्दिगी में जहाँ हवा भी सोच -समझ कर प्रवेश करती है वहां प्रभाकर को आने की इजाजत कहाँ से मलि गयी। यह दलि में सेंधमारी कैसे हो गयी उसकी।

सहसा एक बजिली की तरह एक ख्याल दौड़ पड़ा , अरे हाँ , दलि में सेंध मारी तो हो सकती है क्यूँ की ववािह के बाद , जब पहली बार राघव के साथ बाईक पर बाज़ार गयी थी और सुनसान रास्ते में उसने जरा रोमांटकि जोते हुए राघव की कमर में हाथ डाला था और कैसे वह बीचराह में उखड़ कर बोल पड़ा था कि यह कोई सभ्य घरों की बहुओं के लक्षण नहीं है , हाथ पीछे की ओर झटक दयिा था। बस उसे वक्त उसके दलि का जो तकिोने वाला हस्सिा होता है , तड़िक गया ...और वेदकिा उसी रस्ते से रसिने लगी थोड़ा - थोड़ा , हर रोज़ ....,
हालाँकि बाद में राघव ने मनाया भी उसे लेकनि दलि जो तड़िका उसे फरि कोई भी जोड़ने वाला सोल्युशन बना ही नहीं। वह बेड -रूम के प्यार को प्यार नहीं मानती जो बाते सरि्फ शरीर को छुए लेकनि मन को नहीं वह प्यार नहीं है।

सोचते-सोचते मन भर आया वेदकिा का और सरिहाने पर सर रख सीधी लेट गयी और दोनों हाथ गर्दन के नीचे रख कर सोचने लगी।

पर वेदकिा तू बहुत भावुक है और यह जीवन भावुकता से नहीं चलता ...! यह प्रेम-प्यार सरि्फ कतिाबों में ही अच्छा लगता है ,हकीकत की पथरीली जमीन पर आकर यह टूट जाता है ...और फरि राघव बदल तो गया है न , जैसे तुम चाहती हो वैसा बनता तो जा ही रहा है ...! वेदकिा के भीतर से एक वेदकिा चमक सी पड़ी।

हाँ तो क्या हुआ ...! का वर्षा जब कृषि सुखाने .....मरे , रसिते मन पर कतिनी भी फुआर डालो जीवति कहाँ हो पायेगा ...! वेदकिा भी तमक गयी।

करवट के बल लेट कर कोहनी पर चेहरा टकिा कर राघव को नहिारने लगी और धीरे से उसके हाथ को छूना चाहा लेकनि ऐसा कर नहीं पायी और धीर से सरका कर उसके हाथ के पास ही हाथ रख दयिा। हाथ सरकने -रखने के सलिसलि में राघव के हाथ को धीरे से छू गया वेदकिा का हाथ। राघव ने झट से उसका हाथ पकड लयिा। लेकनि वेदकिा ने खींच लयिा अपना हाथ , राघव चौक कर बोल पड़ा ,क्या हुआ ...!
कुछ नहीं आप सो जाइये ... वेदकिा ने धीरे से कहा और करवट बदल ली।
सोचने लगी , कतिना बदल गया राघव ...! याद करते हुए उसकी आँखे भर आयी उस रात की जब उसने पास लेट कर सोये हुए राघव के गले में बाहें डाल दी थी और कैसे वह वेदकिा पर भड़क उठा था , हडबडा कर उठा बैठा था ...! अब वेदकिा को कहाँ मालूम था कि राघव को नींद में डस्टिर्ब करना पसंद नहीं ...! उस रात उसके तड़िके हुए दलि का कोना थोडा और तड़िक गया , वह भी टेढ़ा हो कर ...सारी रात दलि के रास्ते से वेदकिा रसिती रही।

तो क्या हुआ वेदकिा ...! हर इन्सान का अपना व्यक्तत्वि होता है , सोच होती है। अब तुम्हारा पतिा है तो

क्या हुआ , वह अपनी अलग शख्शयित तो रख सकता है। तुम्हारा कतिना ख्याल भी तो रखता है। हो सकता है उसे भी तुमसे कुछ शकियतें हो और तुम्हें कह नहीं पाता हो और फरि अरेंज मेरेज में ऐसा ही होता है पहले तन और फरि एक दनि मन मलि ही जाते है।थोडा व्यवहारकि बनो , भावुक मत बनो ...! अंदर वाली वेदकिा फरि से चमक पड़ी।

हाँ भई , रखता है ख्याल ...लेकनि कैसे ...! मैंने ही तो बार-बार हथोड़ा मार -मार के यह मूरत गढ़ी है लेकनि ये मूरत ही है इसमें प्राण कहाँ डले है अभी ...! मुस्कुराना चाहा वेदकिा ने।

वेदकिा को बहुत हैरानी होती जो इन्सान दनि के उजाले में इतना गंभीर रहता हो ,ना जाने कसि बात पर नाराज़ हो जायेगा या मुहं बना देगा ,वही रात को बंद कमरे में इतना प्यार करने वाला उसका ख्याल रखने वाला कैसे हो सकता है।

अंदर वाली वेदकिा आज वेदकिा को सोने नहीं दे रही थी फरि से चमक उठी , चाहे जो हो वेदकिा , अब तुम उम्र के उस पड़ाव पर हो जहाँ तुम यह रस्कि नहीं ले सकती कि जो होगा देखा जायेगा और ना ही सामाजकि परस्थितियिां ही तुम्हारे साथ है , इसलएि यह पर-पुरुष का चक्कर ठीक नहीं है।

पर -पुरुष ...! कौन पर-पुरुष क्या प्रभाकर के लएि कह रही हो यह ...लेकनि मैंने तो सरि्फ प्रेम ही कयिा है और जब स्त्री कसिी को प्रेम करती है तो बस प्रेम ही करती है कोई वजह नहीं होती। उम्र में कतिना बड़ा है ,कैसा दखिता है , बस एक अहसास की तरह है उसने मेरे मन को छुआ है ...! वेदकिा जैसे कहीं गुम सी हुई जा रही थी। प्रभाकर का ख्याल आते ही दलि में जैसे प्रेम संचारति हो गया हो और होठों पर मुस्कान आ गयी।

हाँ ...! मुझे प्यार है प्रभाकर से , बस है और मैं कुछ नहीं जानना चाहती ,समझना चाहती ..., तुम चुप हो जाओ ..., वेदकिा थोडा हठी होती जा रही थी।

बेवकूफ मत बनो वेदकिा ...!जो व्यक्ति अपनी पत्नी के प्रति वफादार नहीं है वो तुम्हारे प्रति कैसे वफादार हो सकता है , जो इन्सान अपने जीवन साथी के साथ इतने बरस साथ रह कर उसके प्रेम -समर्पण को झुठला सकता है और कहता है की उसे अपने साथी से प्रेम नहीं है वो तुम्हें क्या प्रेम करेगा। कभी उसका प्रेम आज़मा कर तो देखना ,कैसे अजनबी बन जायेगा , कैसे उसे अपने परविार की याद आ जाएगी ...! वेदकिा के भीतर जैसे जोर से बजिली चमक पड़ी। और वह एक झटके से उठ कर बैठ गयी।

हाँ यह भी सच है ...! लेकनि ...! मैं भी तो कहाँ वफादार हूँ राघव के प्रति...! फरि मुझे यह सोचना कहा शोभा देता है कि प्रभाकर ...! वेदकिा फरि से बैचेन हो उठी।

बस्तिर से खड़ी हो गयी और खड़िकी के पास आ खड़ी हुई। बाहर कोलाहल कम हो गया लेकनि अंदर का अभी जाग रहा है। आज नींद जाने कैसे कहाँ गुम हो गई ...क्या पहली बार प्रभाकर से बात करने की खुशी है या एक अपराध बोध जो उसे अंदर ही अंदर कचोट रहा था।

सोच रही थी क्या अब प्रभाकर का मलिना सही है या कस्मित का खेल कि यह तो होना ही था। अगर होना था तो पहले क्यूँ ना मलि वे दोनों।

राघव के साथ रहते -रहते उसे उससे एक दनि प्रेम हो ही गया या समझोता है ये या जगह से लगाव या नयिति कि अब इस खूंटे से बन्ध गए हैं तो बन्ध ही गए बस।

नींद नहीं आ रही थी तो रसोई की तरफ बढ़ गई। अनजाने में चाय की जगह कॉफ़ी बना ली। बाहर छत पर पड़ी कुर्सी पर बैठ कर जब एक सपि लयिा तो चौक पड़ी यह क्या ...! उसे तो कॉफ़ी की महक से भी परहेज़ था और आज कॉफ़ी पी रही है ...? तो क्या वेदकिा बदल गयी ...! अपने उसूलों से डगि गयी ?जो कभी नहीं कयिा वह आज कैसे हो हो रहा है ...!

राघव की नश्छिलता वेदकिा को अंदर ही अंदर कचोट रही थी कि वह गलत जा रही है ,जब उसे वेदकिा की इस हरकत का पता चलेगा क्या वह सहन कर पायेगा या बाकी सब लोग उसे माफ़ करेंगे उसे ?

अचानक उसे लगने लगा कि वह कटघरे में खड़ी है और सभी घर के लोग उसे घूरे जा रहे हैं नफरत-घृणा और सवालयिा नज़रों से ..., घबरा कर खड़ी हो गई वेदकिा ...

वेदकिा जतिना सोचती उतना ही घरिती जा रही है ...रात तो बीत जाएगी लेकनि वेदकिा की उलझन खत्म नहीं होगी। क्यूंकि यह उसकी खुद की पाली हुई उलझन है ...

तो फरि क्या करे वेदकिा ...? यह हम क्या कहें ...! उसकी अपनी जन्दिगी है चाहे बर्बाद करे या ....

रात के तीन बजने को आ रहे थे। वेदकिा घडी की और देख सोने का प्रयास करने लगी। नींद तो उसके आस - ही नहीं थी।

यह जो मन है बहुत बड़ा छलयिा है। एक बार फरि से उसका मन डोल गया और प्रभाकर का ख्याल आ गया। सोचने लगी क्या वह भी सो गया होगा क्या ...? वह जो उसके ख्यालों में गुम हुयी जाग रही तो क्या

वह भी ...!

खट -खट फोन खटखटा उठा , देखा तो प्रभाकर का ही सन्देश था। फिर क्या वह बात सही है कि मन से मन को राह होती है। हाँ ...! शायद , जब रानी जाग रही हो तो राजा भी जागेगा ही ...

अब इस कहानी का क्या किया जाए क्यूंकि वेदिका का अन्तर्द्वन्द खत्म तो हुआ नहीं।

उसका प्रभाकर के प्रति कोई शारीरिक आकर्षण वाला प्रेम नहीं है बल्कि प्रभाकर से बात करके उसको एक सुरक्षा का अहसाह सा देता है। वह उसकी सारी बात ध्यान से सुनता है और सलाह भी देता है, उसकी बातों में भी कोई लाग -लपेट नहीं दिखती उसे ,फिर क्या करे वेदिका ? यह तो एक सच्चा मित्र ही हुआ और एक सच्चे मित्र से प्रेम भी तो हो सकता है।

लेकिन ऐसे फोन करना या मेसेज का आदान -प्रदान भी तो ठीक नहीं ...! सोचते -सोचते वेदिका मुस्कुरा पड़ी शायद उसे कोई हल मिल गया हो।

वह सोच रही है कि फेसबुक के रिश्ते फेसबुक तक ही सिमित रहे तो बेहतर है। अब वह प्रभाकर से सिर्फ फेसबुक पर ही बात करेगी वह भी सिमित मात्रा में ही।नया जमाना है पुरुष मित्र बनाना कोई बुराई नहीं है लेकिन यह मीत बनाने का चक्कर भी उसे ठीक नहीं लग रहा था। वह प्रभाकर को खोना नहीं चाहती थी।उसने तय कर लिया कि अब वह फोन पर बात या मेसेज नहीं करेगी और सोने की कोशिश करने लगी।

अब रानी समझ गयी है तो राजा को समझना ही पड़ेगा कि असल दुनिया और आभासी दुनिया में फर्क तो होता ही है।

~ उपासना सियाग ~